भौगोलिक समस्या

भूमिका — भूगोल मानव भूगोल की एक प्रमुख शाखा है इसके अन्तर्गत भौतिक एवं मानवीय समानताओं के आधार पर सम्पूर्ण धरातल का वर्गीकरण करके उनका अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा पृथ्वी के उपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों (जैसे पहाड़, महादेश, देश, नगर, नदी, समुद्र, वन आदि) का ज्ञान होता है। प्राकृतिक क्रियाओं के निष्कर्षों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करते हुए पृथ्वी तल की विभिन्नताओं का मानवीय दृष्टिकोण से अध्ययन ही भूगोल का सार तत्व है। पृथ्वी की सतह पर जो स्थान विशेष है उनकी समताओं तथा विषमताओं का कारण और उनका स्पष्टीकरण भूगोल का निजी क्षेत्र है।

भौगोलिक समस्याएँ

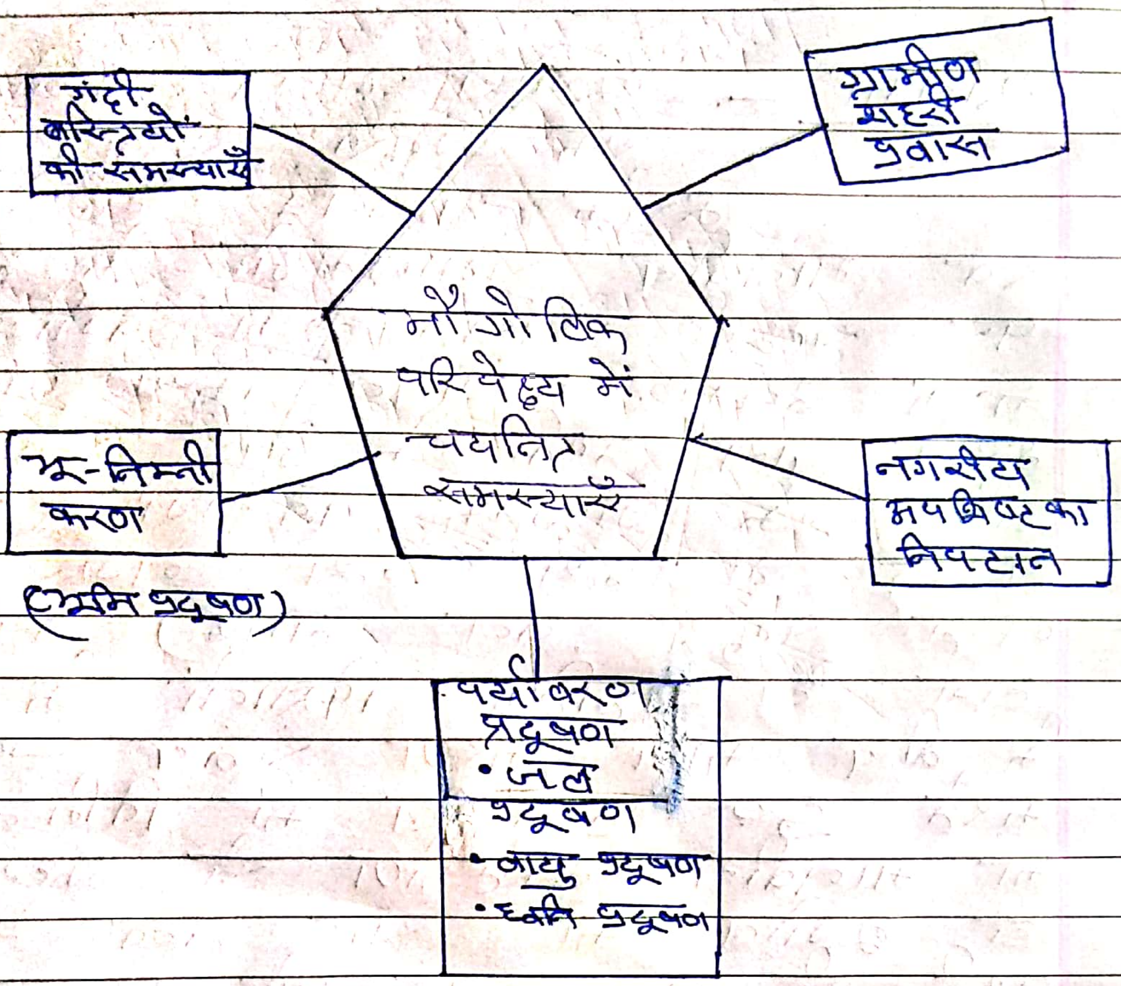

पर्यावरण : पर्यावरण से अभिप्राय हमारे चारों ओर के वातावरण से है।

प्रदूषण (Pollution) : Pollution शब्द की उत्पत्ति लैटिन Pollutionem से हुई है जिसका अर्थ है गंदा करना। इस प्रकार प्रदूषण का प्रयोग वायु, भूमि, जल आदि में प्रतिकूल परिवर्तन से है जिसका मनुष्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

प्रदूषक (Pollutant) : प्रदूषक ऐसे तत्व होते हैं जिनके कारण प्राकृतिक पर्यावरण में प्रदूषण होता है यह गैसीय तरल या ठोस हो सकते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण : सरल शब्दों में प्राकृतिक पर्यावरण को हानि को पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं।
दूसरे शब्दों में "मानवीय क्रियाकलाप से उत्पन्न होने वाले परिणामों के कारण पर्यावरण में जो नकरात्मक परिवर्तन होते हैं उन्हें पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार : सामान्य तौर पर पर्यावरण-प्रदूषण को चार भागों में बाँटा जा सकता है जो इस प्रकार हैं।

- जल प्रदूषण
- वायु प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण
- भूमि प्रदूषण

① जल प्रदूषण : सरल शब्दों में यदि किसी व्यक्ति के लिए पीने योग्य या किसी कार्य के लिए उपयुक्त नहीं रहता है तो इसे जल प्रदूषण कहते हैं।

दूसरे शब्दों में जब जल में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है और अन्य रसायनिक तत्व की मात्रा बढ़ जाती है तो इसे जल प्रदूषण कहा जाता है।

जल प्रदूषण के कारण :

- नालों में गंदगी डाल कर नदियों में प्रवाह करने से।
- उद्योगों द्वारा दूषित जल को नदियों में प्रवाहित करना।
- परम्परागत एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ जैसे मूर्ति विसर्जन।
- असमानता या अशिक्षित लोग जैसे कुछ लोग साबुन का प्रयोग करके नदी में नहाते और कपड़े धोते हैं।
- पशुओं को नदियों में नहलाने एवं मल-मूत्र त्यागने से।

जल प्रदूषण से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ -

- हैजा दूषित जल को पीने से होने वाली मुख्य बीमारी है। इसके अलावा गायरिया, टाइफाइड जैसे बुखार और आंत संबंधी रोग प्रमुख हैं।

• दूषित जल से अनेक प्रकार के कीड़े-मकोड़े उत्पन्न होते हैं। जो कई प्रकार की बीमारियाँ और समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं।

• त्वचा संबंधी रोग।

(2) वायु प्रदूषण: वायु प्रदूषण ऐसी स्थिति है जिसमें वायु में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और अन्य रसायनिक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है।

वायु प्रदूषण के कारण:

• पेट्रोल डीजल और कोयले के जलने से उत्पन्न होने वाले धुएँ के कारण वायु प्रदूषण होता है।

• उद्योगों से निकलने वाली गैस या धुएँ के कारण भी वायु प्रदूषण होता है।

• ठोस कचरा निपटाने के लिए यदि उन्हें जलाया जाता है तो यह वायु प्रदूषण का कारण बनता है।

• सांस्कृतिक रीति-रिवाज जैसे कि दीवाली में पटाखा फोड़ने से।

• मृत व्यक्ति को जलाने से आदि।

③ ध्वनि प्रदूषण : यदि ध्वनि की मात्रा मानवीय सहन सीमा से अधिक है तो इसे ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है

ध्वनि प्रदूषण के कारण :

- बड़ी-बड़ी मशीन द्वारा वस्तु निर्माण, इस प्रकार के ध्वनि प्रदूषण को किसी उद्योग के पास महसूस किया जा सकता है।
- गाड़ियों के शोर गुल, एवं तोड़फोड़ जैसे विकास कार्यों द्वारा।
- सांस्कृतिक एवं सामुदायिक गतिविधियों जैसे कि, जुलूस, जागरण, डीजे पार्टी आदि ~~बहुत व्यक्ति को जलाना~~ आदि।
- यातायात के वाहन भी प्रदूषण का एक स्रोत है और यह प्रदूषण वाहनों तथा सड़कों की स्थिति पर निर्भर करता है जैसे कि समुद्री जहाजों हवाई जहाजों या किसी बड़े ट्रक की आवाज।

* नगरीय अपशिष्ट निपटान की समस्या

नगरों में जनसंख्या के अत्यधिक बढ़ने से कूड़ा- करकट भी अत्यधिक हो जाता है। और इसी कूड़े करकट के निपटान की उचित व्यवस्था ना हो पाने के कारण जो समस्या उत्पन्न होती है उसे नगरीय अपशिष्ट निपटान की समस्या कहते हैं।

समस्याएँ :

कूड़े अलग-अलग करने की समस्या :

लोग कूड़े को एक साथ फेंकते हैं और जब किसी स्थान पर इस कूड़े को इकट्ठा किया जाता है तो इसे अलग- अलग करके छाँटने में समस्या आती है जैसे कि प्लास्टिक के डब्बे, पॉलीथिन, सब्जी -फल के छिलके आदि।

पुनर्चक्रण की समस्या : नगरीय क्षेत्रों में कूड़े का अलग- अलग न कर पाने के कारण पुनर्चक्रण को पर्याप्त रूप से संभव नहीं बनाया जा सकता है।

भू-प्रदूषण तथा क्षेत्र के आभाव की समस्या जिस स्थान पर कूड़ा

फेंका जाता है वह स्थान प्रदूषित हो जाता है और आज के दौर में नगरीय क्षेत्रों में इतना अधिक कूड़ा हो गया है कि और अधिक क्षेत्र की आवश्यकता है जबकि नगरों में अधिक क्षेत्र का अभाव होता है

• नगरीय कूड़ा करकट तथा औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ बहकर नदियों में प्रवेश करते हैं और नदियों के जल को प्रदूषित करते हैं।

• नगरीय क्षेत्रों में प्रतिदिन प्रति व्यक्ति होने की मात्रा में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है और इसको चौराहे आदि भिन्न-भिन्न स्थानों पर इनका ढेर लगने लगा है। जिससे अनेक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

• जो कूड़े को खुले में फेंका जाता है तो कि धीरे-धीरे वह कूड़ा सड़ने लगता है और उससे निकलने वाली बदबू या हानिकारक गैसे वायुमंडल में फैलती है और यह अत्यधिक हानिकारक है।

Scanned with CamScanner

* ग्रामीण शहरी प्रवास : ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या के प्रवास को ग्रामीण शहरी प्रवास कहा जाता है, ग्रामीण शहरी प्रवास नकारात्मक है क्योंकि शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के बढ़ने के कारण कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। जैसे कि गंदी बस्तियों का निर्माण।

ग्रामीण शहरी प्रवास के कारण

- नगरीय क्षेत्रों में मजदूरों की अधिक मांग।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के निम्न (कम) अवसर
- नगरीय क्षेत्रों में अधिक सुविधाएँ होती है।
- शहरी क्षेत्रों में श्रमिकों और मजदूरों को अधिक वेतन मिल जाता है।

* गंदी बस्तियों की समस्याएँ।

गंदी बस्ती ऐसी बस्तियाँ होती है जिनमें शौचालय, स्नानघर, जल निकास प्रणाली आदि की अत्यंत कमी पायी जाती है इसे मलिन बस्ती भी कहा जाता है एशिया की सबसे बड़ी गंदी या मलिन बस्ती भारत में मुम्बई के धारावी है।

समस्याएं :

- इस प्रकार की बस्तियों में किसी भी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती है जैसे कि 1440 लोगों के लिए 1 शौचालय।
- जल निकास प्रणाली की अत्यंत कमी पायी जाती है जिस कारण सड़के और गलियाँ गंदी होती हैं।
- स्वास्थ्य सुविधा का अभाव तो होता ही है साथ ही कई प्रकार की बीमारियों की संभावनाएं भी होती हैं।
- सड़के गलियाँ और घर बहुत ही छोटे एवं तंग होते हैं कुछ गलियों में साइकिल भी नहीं जा सकती।
- अधिक आबादी बहुत ही कम घरों में निवास करती है।

* भू निम्नीकरण / भू प्रदूषण

भूमि की उत्पादन क्षमता में कमी को भू-निम्नीकरण कहते हैं

कारण :

भारत की लगभग 18% भूमि कृषि रहित बंजर भूमि बन चुकी है जिसके निम्नलिखित कारण हैं

• भूमि पर निरन्तर कृषि करना।

• कृषि में रसायन का अनुचित प्रयोग।

• मृदा अपरदन के कारण मिट्टी की उपरी उपजाऊ परत हट जाती है।

• जलभराव या बाढ़ के कारण भी भू-निम्नीकरण हो जाता है।

• अम्लीय वर्षा भी भूमि को प्रदूषित करती है।

• नगरीय अपशिष्ट अर्थात् कूड़ा करकट।

उपाय :

• जैविक कृषि के द्वारा भूमि निम्नीकरण की समस्या से बचा जा सकता है।

• किसानों को प्रशिक्षण देकर रासायनिक पदार्थों के उचित प्रयोग की जानकारी देना।

• प्रदूषित जल को कृषि में प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे भूमि प्रदूषित होती है।

Scanned with CamScanner